पाठ — 4

* आदर्श बदला *

प्रश्न निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

गद्यांश क्र. 1 (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 16)

प्रभात का समय था ....
.... क्षमा के योग्य है।

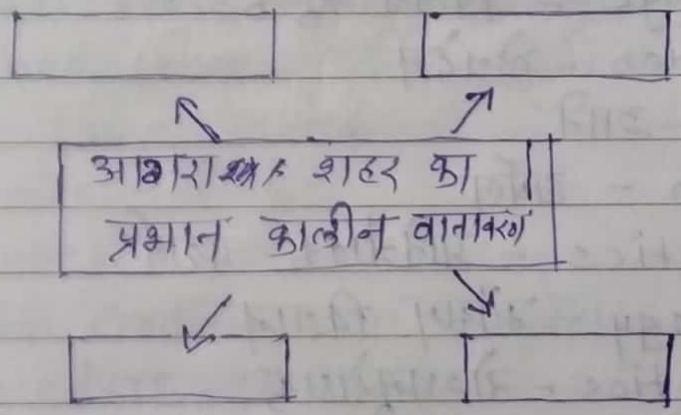

कृति -1 (आकलन)

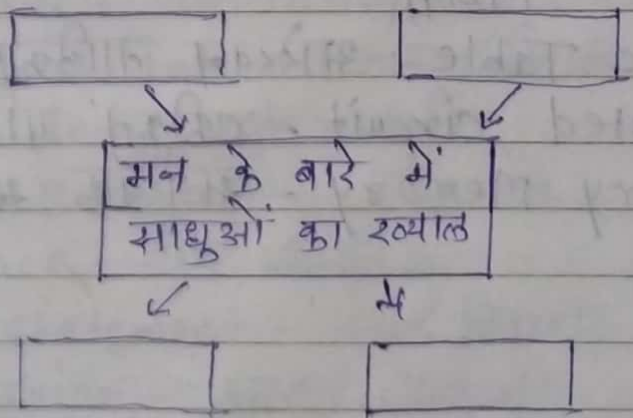

1) संजाल पूर्ण कीजिए।

2)

* साधुओं की मंडली आगरा शहर में यह गीत गा रही थी —

1)

2)

(2) (शब्द संपदा)

* निम्नलिखित शब्दों के लिंग बदलकर लिखिए।

1) पत्ते 2) स्वामी

3) राग 4) आदमी

कृति - 3 (अभिव्यक्ति)

* साधु-संतो को राग विद्या की जानकारी न होने के कारण मौत की सजा दिया जाना क्या उचित है? इस विषयपर 40 से 50 शब्दों मे अपने विचार लिखिए।

उत्तर - साधु-संत दीन-दुनिया से विरक्त ईश्वर आराधना में लीन रहनेवाले लोग होते है। इन्हे राग, छंद और संगीत का समुचित ज्ञान नही होता। भजन भी वे अपनी आत्म संतुष्टि और ईश्वर आराधना के लिए गाते है। इनका उद्देश्य उसे राग में गा कर किसी को प्रसन्न करना नही होता है। आगरा शहर मे बिना सुर ताल की परवाह किए हुए और बादशाह के कानून से अनभिज्ञ थे साधु गाते हुए जा रहे थे। इन्हे इस जुर्म में पकड़ लिया गया था कि वे आगरा की सीमा मे गाते हुए जा रहे थे। अकबर के मशहूर रागी तानसेन ने यह नियम बनवा दिया था कि जो आदमी राग विद्या में उसकी बराबरी न कर सके वह आगरा की सीमा मे न ~~आए~~ गाए। यदि गाए तो उसे मौत की सजा दी जाए।

अत: इन्हे मौत की सजा दे दी गई। इस तरह साधुओं को मौत की सजा देना उनके साथ बिलकुल अन्याय है। इस तरह के कानून से तानसेन से अभिमान की बू आती है।

गद्यांश क्र - 2 (पाठ्य पुस्तक पृष्ठ क्र. 17)
इन्ही विचारो में डूबा .... मौन का बदला ले सकूँ।

कृति - 1 (आकलन)

1) बाबा हरिदास का रूप

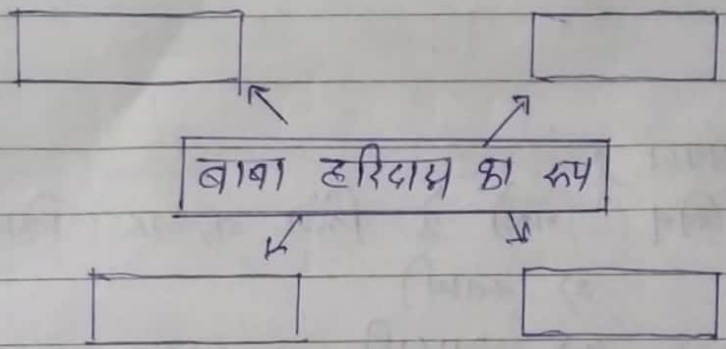

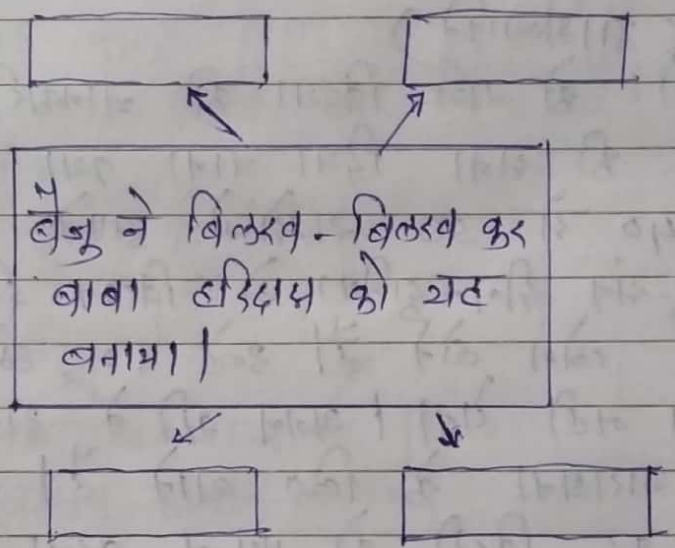

2) बैजू ने बिलख - बिलख कर बाबा हरिदास को यह बताया।

(2) उत्तर लिखिए।

1) बैजू ने हरिदास के चरणो मे और ज्यादा लिपट कर यह कहा -
1)
2)
3)
4)

2) बैजू की आँखो मे ये थे -
1)
2)
3)
4)

(3) हरिदास का हीरज खिलाने के लिए बैजू द्वारा चलाए गए हथियार →

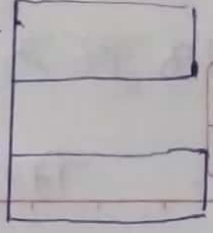

4) बैजू ने दिया बाबा हरिदास को यह वचन -

i)
ii)
iii)
iv)

(3) आकृति पूर्ण कीजिए :

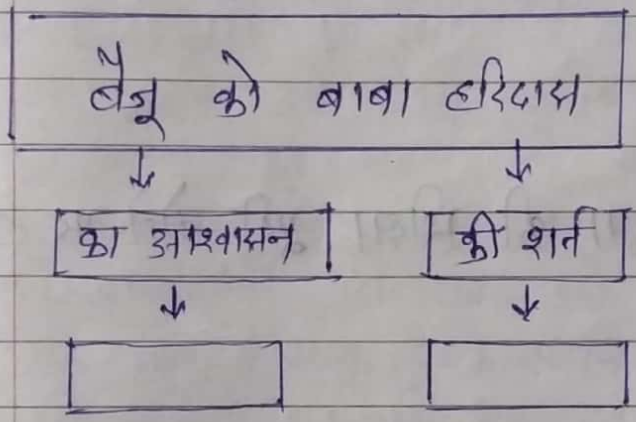

कृति - 2 (शब्दसंपदा)

① लिंग बदलकर लिखिए

1) बेटा 2) बच्चा 3) सेवक 4) सूना

② समानार्थी शब्द लिखिए

1) संसार 2) तबाह 3) चरण 4) आखिरी

(अभिव्यक्ति)

* 'बिनु गुरु होय न ज्ञान' इस कथन के बारे में 40 से 50 शब्दों में अपने विचार लिखिए।

Scanned by CamScanner

गद्यांश - ③ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र 17-18

ऊपर की घटना को .... विवाद नहीं करना।

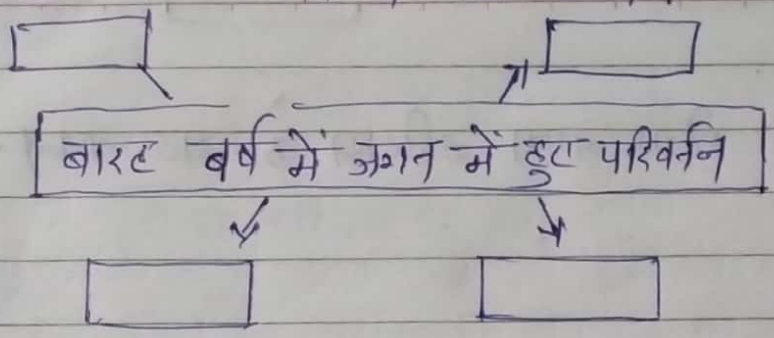

२) उत्तर लिखिए :

* जवान बैजू की संगीत की विशेषताएँ -

१)

२)

३)

४)

(३) बैजू की राग विद्या की शिक्षा पूरी होने पर हरिदासजी ने यह कहा -

१)

२)

४)

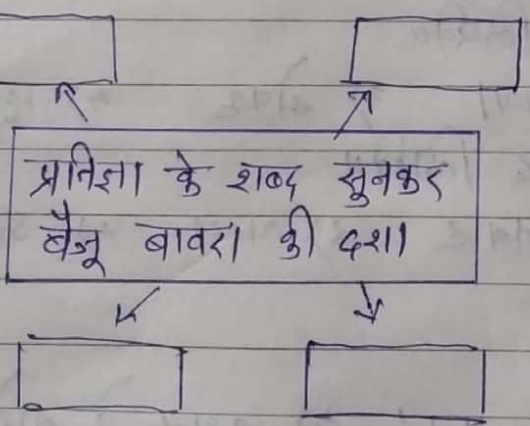

(शब्दसंपदा)

विरुद्धार्थी शब्द लिखिए।

१) उजड़ना x २) बूढ़े x

३) कृतज्ञता x ४) उपकार x

(अभिव्यक्ति) * कृतज्ञता मनुष्य का उत्तम गुण है इस विषयपर ४० से ५० शब्दों में अपना मत लिखिए

Scanned by CamScanner

* पाठपर आधारित लघुत्तरी प्रश्न *

1) आदर्श बदला कहानी के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :- अपने पिता को मृत्युदंड दिए जानेपर बैजू विक्षिप्त हो गया था। और अपनी कुटिया मे विलाप कर रहा था। उस समय बाबा हरिदास ने उसकी कुटिया में आकर उसे ढाढस बँधाया था। तब बालक बैजू ने बाबा को बताया था कि उसे उस बदले की भूख है। वे उसकी इस भूख को मिटा दे। बाबा हरिदास ने उसे वचन दिया था कि वे उसे ऐसा हथियार देंगे, जिससे वह अपने पिता की मौत का बदला ले सकेगा।

बाबा हरिदास ने बारह वर्षो तक बैजू को संगीत की हर प्रकार की बारीकीयाँ सिखाकर उसे पूर्ण गंधर्व के रूप में तैयार कर दिया। मगर इसके साथ ही उन्होंने उससे यह वचन भी ले लिया था कि वह इस राग विद्या से किसी को हानि न पहुँचाएगा।

इसके बाद वह दिन भी आया जब बैजू आगरा की सडकोंपर गाता हुआ निकला और उसके पीछे प्रशंसक की भीड। आगरा में गाने के नियम के अनुसार उसे बादशाह के समक्ष पेश किया गया और शर्त के अनुसार तानसेन से उसकी संगीत प्रतियोगिता हुई, जिसमे तानसेन को बुरी तरह पराजित कर दिया। तानसेन बैजू बावरा के पैरो पर गिरकर अपनी जान की भीख माँगने लगा। इस मौके पर बैजू बावरा उससे अपने पिता की मौत का बदला लेकर उसे प्राणदंड दिलवा सकता था। पर ~~उसके~~ उसने ऐसा नही किया। बैजू ने तानसेन को जान बख्शा दी। उसने उससे केवल इस निष्ठुर नियम को हटवा देने के लिए कहा जिसके अनुसार किसी आगरे की सीमाओ मे गाने और तानसेन की जोड का न होनेपर मरवा दिया जाना था। इस तरह बैजू ने तानसेन का गर्व नष्टकर उससे अनोखा बदला लेकर उसे श्रीहीन कर दिया। यह अपनी तरह का आदर्श बदला था।

Scanned by CamScanner

DOMS Page No.
Date / /

* बैजू बावरा संगीत का सच्चा पुजारी है' इस विषय विचार को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :- सच्चा कलाकार उसे कहते हैं, जिसे अपनी कला से सच्चा लगाव हो। वह अपने गुरु की की कही हुई बातोंपर अमल करे तथा गुरु से विवाद न करे। इसके अलावा उसे अपनी कला पर अहंकार न हो। बैजू बावरा ने बारह वर्ष तक बाबा हरिदास से संगीत सीखने की कठिन तपस्या की। वह उनका एक आज्ञाकारी शिष्य था। उसकी संगीत शिक्षा पूरी हो जाने के बाद बाबा हरिदास ने जब उससे यह प्रतिज्ञा करवाई कि वह इस राग विद्या से किसी को हानि नही पहुँचाएगा, तो भी उसने खून का घूँट पी कर इस गुरु आदेश को स्वीकार कर लिया था, जबकि उसे मालूम था कि इससे उसके हाथ में आई हुई ~~प्रतिशोधिका~~ प्रतिहिंसा की छुरी कुंद कर दी गई थी। फिर भी गुरु के सामने उसके मुँह से एक शब्द भी नहीं निकला।

बैजू बावरा की संगीत कला की धाक दूर दूर तक फैल गई थी। उसके संगीत में जादू का असर था। गानयुद्ध मे तानसेन ~~की~~ को पराजित करने पर भी वह अपनी जीत और संगीत का प्रदर्शन नही करता। बल्कि वह तानसेन को जीवनदान दे देता है। वह उससे केवल यह माँग करता है कि वह इस नियम को खत्म करवा दे कि जो कोई आगरा की सीमा के अंदर गाए वह अगर तानसेन की जोड़ का न हो, तो मरवा दिया जाए। उसकी इस माँग में भी गीत-संगीत की रक्षा करने की भावना निहित है।

इस प्रकार इसमे कोई संदेह नही कि बैजू बावरा संगीत का सच्चा पुजारी था।

Scanned by CamScanner

* मुहावरे *

1) अगर मगर करना - टाल-मटोल करना।
2) अपना राग अलापना - अपनी ही बातें करते रहना।
3) चाँदी काटना - बहुत लाभ कमाना।
4) कान भरना - चुगली करना।
5) जली-कटी सुनाना - कटु बात करना।

* कालपरिवर्तन *

1) प्रकाश की किरणे संसारपर नवीन जीवन की वर्षा कर रही थी। (सा. वर्तमानकाल करो।)
2) जो जवान थे उनके बाल सफेद हो गए। (सा. भविष्यकाल करो।)
3) मेरी आँखो आँखे दूसरो की मौत को देखने के लिए हर समय तैयार है। (पूर्ण भूतकाल करो।)
4) बैजू बावरा की उंगलियाँ सितार पर दौड रही थी। (अपूर्ण वर्तमान काल करो।)
5) बहुत अच्छा! दोबारा बुलाकर दिखा देना हूँ। (सा. भविष्यकाल करो।)

Scanned by CamScanner